हनुमान जयंती पर सरस और अनोखा पर्व

विशालकाय ध्यानस्थ प्रतिमा से लगी उनकी सुनहरी गदा के अंदर से सितार निकाल कर अनुपमा भागवत ने राग वसंतमुखारी की अप्रतिम अवतारणा की। गदा में स्थित सुरबहार जैसी भारी भरकम आकृति वाले सितार में तुम्बे की जगह स्वर्णिम गदा पर ही दाहिना हाथ साधे अनुपमा ने कोमल धैवत की सुदीर्घ मींड लेकर अपने सितारवादन की शुरुआत की तो जनसमुदाय विस्मित रह गया। भैरवी के संपूर्ण कोमल स्वरों वाली संक्षिप्त आलाप से उन्होंने सितार वादन संपन्न किया तो सम्मान समारोह की सुरीली भूमिका बन चुकी थी।

मुरारी बापू द्वारा कला साधकों को दिया जाने वाला 'हनुमंत अवार्ड' इस वर्ष शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कर्नाटक कंठ संगीत के लिए डॉ बाल मुरली कृष्ण को, वाद्य संगीत के लिए उस्ताद अमजद अली खां को, ताल वाद्य के लिए शिव मणि को व नृत्य के लिए नटराज अवार्ड हेलेन और आशा पारीख को प्रदान किया गया।

फिल्मों में अभिनय के लिए जितेंद्र को, गुजराती लोक नाट्य भवई के लिए घनश्याम नायक को, गुजराती रंगमंच के लिए स्व. उपेंद्र तिवारी को और चित्रशिल्प के लिए ललित कला सम्मान झवेरी लाल मेहता को प्रदान किया गया। सम्मान समारोह को

उस्ताद अमजद अली खां

कल्पनाशील सुरमयता से सजाया बापू की संगीत मंडली ने जो मंच पर सम्मान के लिए डॉ बालमुरली कृष्ण के लिए राग हंस ध्वनि बजाती, उस्ताद अमजद अली खां के लिए राग दुर्गा की बंदिश तो भवई कलाकार के लिए ठेठ गुजराती लोक संगीत।

संगीत सभाओं की पूर्णाहुति दी उस्ताद अमजद अली खां ने अपने सुरीले सरोदवादन से, जहां उन्होंने स्वरचित गणेश कल्याण और 'आहुति' जैसे रागों से लेकर दुर्गा, वैष्णव जन, रघुपति राघव, बंगाली कीर्तन और बीहू व एकला चलो रे से लेकर भैरवी की टकसाली बंदिश तक बजाई।

पं बालमुरली कृष्ण और पं अजय चक्रवर्ती की कर्नाटक-हिंदुस्तानी गायन जुगलबंदी में राग हंसध्वनि से लेकर 'कदन कुतू हलम' का तिल्लाना तक लोगों को बांधे रहे। शिवमणि के तालवाद्यों की असीम संभावनाओं से लोग विस्मित थे जो कि तबला, मृदंगम से लेकर घंटी, थाली, नलतरंग, ऑक्टोपैड, सूखी फलियों और बंद सूटकेस तक पर तिस, चतुस्र खंड और मिस्र जातियों के छंद बजा सकते थे। उनका की बोर्ड पर साथ दिया सत्य नारायण ने और गायन में उनकी पत्नी रूना।

गायन, वादन के अलावा नृत्य की नुमाइंदगी की ओड़िशा से आए 'प्रिंस नृत्य दल' ने, जिसमें फुटपाथ पर जिंदगी गुजराने वाले 26 किशोरों ने अपनी प्रतिभा का प्रभावी परिचय दिया। मनारा चोपड़ा का नृत्य दल मुंबई से आया था। जाहिर है उसने फिल्मी गीतों पर नृत्य को वरीयता दी, पर शास्त्रीय नृत्य की प्रामाणिक प्रस्तुति दी कथक नृत्यांगना महुवा शंकर और उनके प्रतिभाशाली कलाकारों ने 'सेवेन सेंसेज' की 'सप्तसुगंध' से; जिनमें तबले पर थे उस्ताद अकरम खां, मृदंगम पर एन पद्मनाभन, सारंगी पर मुराद अली, सितार पर फतेह अली, गायन में शोएब हसन, और पढ़त पर नूपुर शंकर। महुवा में महुवा के नृत्य ने धूम मचा दी। इस प्रस्तुति से पहले 11 वर्षीय जरगम खां ने सोलो तबला वादन से लोगों का दिल जीत लिया। उनकी हर तिहाई पर उनके गुरुपिता उस्ताद अकरम खां का चेहरा खिल उठता।

प्रातःकालीन और मध्याह्न की सरस संगोष्ठियों में ज्ञानवर्धक चर्चा और काव्यपाठ का भी लोगों ने भरपूर आनंद लिया। दोपहर का एक सत्र 'मेरा स्वर, मेरी दिशा' विशेष रूप से उल्लेखनीय था जिसमें हिमानी व्यास नायक कविता और फिल्म संगीत, उस्मान मीर- सूफी संगीत और संतवाणी और चिंतन उपाध्याय जैसे शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद गायकी से जुड़े कलाकार आमंत्रित थे, अपनी साधना के रहस्य साझा करने के लिए।

आश्रम और चित्रकूट धाम में आयोजित सभी सत्रों में दर्शकों/श्रोताओं के बीच साहित्य संगीत का भरपूर आनंद लेते मुरारी बापू भी देखे जा सकते थे अपने सहज, सरल और सुलभ सान्निध्य से लोगों को अभिभूत करते। हनुमान जयंती तो हर वर्ष आती है,लेकिन चित्रकूट धाम में 31 मार्च से 4 अप्रैल तक 'अस्मिता पर्व' के साथ आयोजित इस बार की हनुमान जयंती अविस्मरणीय रही।

नई दिल्ली